सोनीपत-हरियाणा। परमात्मा द्वारा सिखाये गए राजयोग के माध्यम से विश्व शांति के लिए 'सामूहिक राजयोग' मासिक कार्यक्रम के दौरान योग के द्वारा शांति की तरंगें फैलाते हुए दिल्ली क्षेत्र की सब ज़ोन इंचार्ज राजयोगिनी दादी रुक्मणि, राजयोगी ब्र.कु. बृजमोहन, ब्र.कु. आशा दीदी, ब्र.कु. शुक्ला दीदी, ब्र.कु. चक्रधारी दीदी, जर्मनी से सुदेश दीदी, रशिया से सुधा दीदी, वहाँ की वरिष्ठ राजयोग शिक्षिकायें तथा ब्र.कु. भाई बहनें।

आत्मविश्वासी - एक कुशल प्रशासक

जेम्स एलन ने कहा है - ''जिनके व्यक्तित्व से विश्वास और मस्तिष्क से श्रेष्ठता के भाव टपक रहे होंगे, सफलता उन्हें ही मिलेगी।''

किसी और ने कहा है - ''जिसका आत्मविश्वास नहीं हार सका, वह स्वयं भी कभी नहीं हार सकता है।''

ठीक ही तो है - जिस समय सारी आशायें समाप्त हो जाती हैं, उस समय अटूट आत्मविश्वास और लगातार काम करते रहने का संकल्प ही मनुष्य को सफल और विजयी बनाता है। इसलिए जिस व्यक्ति में आत्मविश्वास है, वही एक कुशल प्रशासक के रूप में सिद्ध हो सकता है। प्रशासन की कला अपने आपमें एक बहुत बड़ी कला है, क्योंकि इसमें अधिकतर सभी शक्तियों का, गुणों का और विशेषताओं का प्रयोग होता है। एक कुशल प्रशासक की कसौटी है - विपरीत वातावरण, वायुमण्डल, व्यक्ति एवं स्वभाव संस्कार आदि में भी वह इन्हें परखकर, यथार्थ निर्णय लेकर, स्वयं संतुष्ट रहता है तथा हरेक को संतुष्ट रखता है, तभी कहेंगे कि वह कसौटी पर खरा उतरा।

विश्व भर में सर्वश्रेष्ठ प्रशासक थे - प्रजापिता ब्रह्मा। आज तक सम्पूर्ण इतिहास में ऐसे किसी भी प्रशासक का वर्णन नहीं जिन्होंने इतनी कुशलता से प्रशासन किया हो। ब्रह्मा बाबा में यह विशेष गुण था कि वे किसी भी कार्य को असंभव नहीं मानते थे। यहाँ तक कि सभी मित्र-सम्बन्धी आदि उनके विरुद्ध हो गए, समाचार-पत्रों में उनकी बुरी तरह से बदनामी हुई, फिर भी परमात्मा शिवबाबा में अटूट विश्वास व स्वयं में सम्पूर्ण आत्मविश्वास के कारण वे कभी भी हिम्मत नहीं हारे, निराश नहीं हुए, अथवा असफलता आने पर भी वे कभी भी उदास नहीं हुए। चिंताओं की रेखा कभी भी उनके विशाल मस्तक ललाट पर उभरी हुई नहीं देखी गई। उनका यही विश्वास था कि हिम्मत करने वाले को ही खुदा की हज़ार गुना मदद मिलती है। उन्हीं के इस आत्मविश्वास की शक्ति के कारण, उनकी त्याग, तपस्या और अथक सेवाओं के कारण आज भी यह रूद्र ज्ञान यज्ञ पिछले 80 साल से निर्विघ्न रूप से दिन दुनी रात चौगुनी उन्नति की ओर बढ़ता जा रहा है।

इसलिए किसी ने ठीक ही तो कहा है - ''जिसे अपनी योग्यता, क्षमता और शक्ति सामर्थ्य पर विश्वास है, वही एक कुशल प्रशासक बन सकता है। जिन्हें स्वयं की क्षमता पर ही विश्वास नहीं, दूसरे लोग भी उन पर विश्वास नहीं करते।'' ऐसे दृढ़ विश्वास वाले प्रशासक जो निश्चय कर लेते हैं, उसे पूरा करके ही छोड़ते हैं। भले ही उनके मार्ग में कितने ही अवरोध चट्टान बनकर अड़े क्यों न रहे हों। उनका प्रभावशाली व्यक्तित्व सम्पर्क में आने वालों में भी प्राण फूंक देता है और वे अनायास ही उनके सहायक बनते जाते हैं।

आत्मविश्वास को कैसे बढ़ाएँ

आत्मविश्वास को जागृत रखना परमावश्यक है। क्योंकि यदि मानव की आत्मविश्वास रूपी ज्योति बुझ जाए तो उसका जीवन ही अंधकार

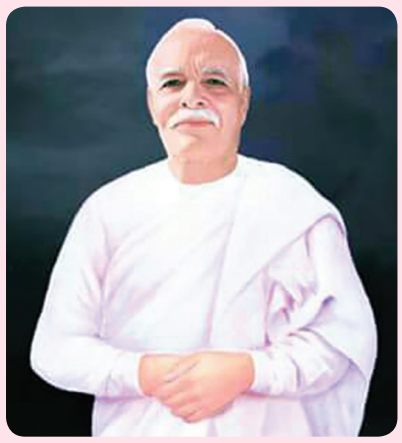

से घिर जाता है। इसलिए इसे सदा के लिए कायम रखने के लिए.....

सदा अपने स्वमान की सीट पर सेट रहो। 'मैं कौन हूँ'- इसको जानते हुए भी भूल जाते तभी दिलशिकस्त हो जाते हैं। सदा यह स्मृति रखो कि 'मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ', 'सर्वगुण सम्पन्न हूँ', 'मैं प्राप्ति स्वरूप आत्मा हूँ', 'मैं स्वराज्य अधिकारी सो विश्व राज्य अधिकारी आत्मा हूँ।' जितना-जितना हमारा स्वमान बढ़ता जाएगा, उतना ही हमारा आत्मविश्वास जागृत होता जाएगा।

हम स्वयं भगवान के बच्चे अर्थात् ईश्वरीय सन्तान हैं। इसलिए जबकि स्वयं भगवान हज़ार भुजाओं सहित मेरे साथ हैं, तो किसी भी कार्य को करने की क्षमता मेरे में हो सकती है। इसलिए सोचो - ''यदि मैं ही नहीं करूंगा तो भला और कौन करेगा।''

आत्मविश्वास की कमी तभी होती है जब हम दूसरों की विशेषताओं को वा भाग्य को वा पार्ट को देख ईर्ष्या करते, उस समय हिम्मत कम रखते और ईर्ष्या ज़्यादा करते। ऐसे समय पर एक बात बुद्धि में रखो कि ड्रामा के नियम प्रमाण संगमयुग पर हरेक आत्मा को कोई न कोई विशेषता मिली हुई है। इसलिए अपनी विशेषता को पहले पहचानो और फिर उसे कार्य में लगाओ। कार्य में लगाने से एक विशेषता और विशेषताओं को लाएगी और इससे हमारा आत्मविश्वास भी बढ़ता जाएगा।

जितना-जितना हम योग-अभ्यास की गहराई में जायेंगे, उतना ही हमारा आत्मविश्वास बढ़ता जाएगा, क्योंकि योग में एकाग्रता की शक्ति द्वारा हमारी आन्तरिक शक्तियों का विकास होता है, पाप-कर्मों के बोझ से आत्मा हल्की हो जाती है और आत्म-अनुभूतियाँ बढ़ती जाती हैं, अर्थात् आत्मा की स्वयं को पहचानने की शक्ति बढ़ती जाती है।

असफलता मिलने पर जल्दी से हिम्मत हारकर, उमंग-उत्साह खोकर न बैठ जायें, बल्कि 'मैं हूँ ही विजयी रत्न' इस स्मृति स्वरूप से निरंतर श्रम करते रहें।

विपरीत वातावरण, वायुमण्डल में या व्यक्तियों से माया का वार होने पर दिलशिकस्त न हों। यह संकल्प न उठे 'मैं तो सचमुच हूँ ही ऐसा', 'मेरे में शक्ति नहीं' आदि। यह याद रहे कि इस पुरुषोत्तम कल्याणकारी संगमयुग पर मेरा कोई कुछ भी बिगाड़ नहीं सकता है। मेरे भाग्य में सब-कुछ अच्छा ही लिखा हुआ है, क्योंकि भाग्यविधाता मेरा अपना हो गया। हरेक आत्मा का भाग्य अपना-अपना है। कोई भी किसी का भाग्य छीन नहीं सकता है।

तो, हे जगत के उद्धारकों, इस प्रकार भिन्न-भिन्न युक्तियों द्वारा अपने आत्मविश्वास को बढ़ाते चलो। उसे कभी भी कम न होने दो। क्योंकि अपना आन्तरिक विश्वास ही वह प्रकाश है जो कभी साथ नहीं छोड़ता है, धोखा नहीं देता है।

आत्मविश्वास होने से फायदे

* आत्मविश्वासी सदा अपने को प्राप्ति सम्पन्न अनुभव करेंगे।
* माया के किसी भी प्रकार के वार से घबरायेंगे नहीं।
* उनकी निरंतर और एकरस उन्नति होगी।
* उनकी योग्यतायें निखरेंगी।
* मानसिक शक्तियों का विकास होगा।
* चमत्कारिक कार्य करने की क्षमता जागृत होगी।
* वह दूसरों को भी अपने बल की छाया में तन-मन की शान्ति और शक्ति की अनुभूति करायेगा।
* आत्मविश्वास से मन मज़बूत और बुद्धि विशाल होगी।
* असम्भव कार्य भी सम्भव होंगे।
* सहज ही परिवर्तन का कार्य कर सकेंगे।

दिल्ली। दीपावली के अवसर पर माननीय मुख्यमंत्री अरविन्द केजरीवाल को बधाई व सौगात देते हुए ब्र.कु.मीरा। साथ हैं ब्र.कु. ममता, ब्र.कु. सोनिया व नरेन जैन।

मालिया हाटीना-गुज.। सिविल कोर्ट जज मकसूदन शेख साहेब तथा नायदा बहन शेख को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. मीता।

सिरसा-हरियाणा। वरिष्ठ उद्योगपति सुमेर गर्ग तथा गर्ग मोटर्स की मैनेजिंग डायरेक्टर सिम्पी गर्ग को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. डॉ. सचिन परब,मुम्बई तथा ब्र.कु. बिन्दू।

मलुदीह-कुशीनगर(उ.प्र.)। चैतन्य देवियों की झाँकी का उद्घाटन करते हुए विधायक रजनीकांत मणि त्रिपाठी, ब्र.कु. प्रमिला, ब्र.कु. सुनीता व अखिलेश भाई।

लाल कोठा-डालटनगंज(झारखण्ड)। दीपावली के कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए शिक्षिका रूबी बहन, ब्र.कु. किरण, थाना प्रभारी हीरा भाई तथा उद्योगपति विनय अग्रवाल।